प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): आदरणीय अध्यक्ष जी, सबसे पहले मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद करता हूं।... (व्यवधान) यह मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे पहले भी कई बार राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद करने का अवसर मिला है, लेकिन इस बार मैं धन्यवाद के साथ-साथ राष्ट्रपति महोदया जी का अभिनन्दन भी करना चाहता हूं। अपने विज़नरी भाषण में राष्ट्रपति जी ने हम सबका और करोड़ों देशवासियों का मार्गदर्शन किया है। गणतंत्र के मुखिया के रूप में उनकी उपस्थिति ऐतिहासिक भी है और देश की कोटि-कोटि बहन, बेटियों के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा का अवसर भी है।

आदरणीय राष्ट्रपति महोदया ने आदिवासी समाज का गौरव तो बढ़ाया ही है, लेकिन आज आजादी के इतने सालों के बाद आदिवासी समाज में जो गौरव की अनुभूति हो रही है, उनका जो आत्मविश्वास बढ़ा है, इसके लिए यह सदन भी और देश भी उनका आभारी है।... (व्यवधान) राष्ट्रपति जी के भाषण में संकल्प से सिद्धि तक की यात्रा का बहुत बढ़िया तरीके से एक खाका खींचा गया। एक प्रकार से देश को एकाउन्ट भी दिया गया, इन्स्पिरेशन भी दिया गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहाँ पर सभी माननीय सदस्यों ने इस चर्चा में हिस्सा लिया। हर किसी ने अपने-अपने आंकड़े दिए, अपने-अपने तर्क दिए।... (व्यवधान) और अपनी रूचि, प्रवृति और प्रकृति के अनुसार अपनी बात रखी। जब इन बातों को गौर से सुनते हैं, उसे समझने का जब प्रयास करते हैं तो यह भी ध्यान में आता है कि किसकी कितनी क्षमता है, किसकी कितनी योग्यता है, किसकी कितनी समझ है और किसका क्या इरादा है, ये सारी बातें प्रकट होती ही हैं और देश भलीभांति तरीके से उसका मूल्यांकन भी करता है।

मैं चर्चा में शामिल सभी माननीय सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। लेकिन, कल मैं देख रहा था, कुछ लोगों के भाषण के बाद पूरा इको सिस्टम। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, मैं अंतिम बार बोल रहा हूं। आप अपने सीट पर बैठिए। कृपया आप न बोलें। आप वरिष्ठ सदस्य हैं।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: पूरा इको सिस्टम उछल रहा था। कुछ लोग तो खुश होकर कह रहे थे**-** यह हुई न बात। शायद नींद भी अच्छी आई होगी**,** शायद आज उठ भी नहीं पाए होंगे। ऐसे लोगों के लिए कहा गया है**,** बहुत अच्छे ढंग से कहा गया है**-**

यह कह कह कर हम**,** दिल को बहला रहे हैं
यह कह कह कर हम**,** दिल को बहला रहे हैं
वो अब**,** वो अब चल चुके हैं**,** वो अब आ रहे हैं।

16.00hrs

माननीय अध्यक्ष जी, जब राष्ट्रपति जी का भाषण हो रहा था, कुछ लोग कन्नी भी काट गए। एक बड़े नेता महामहिम राष्ट्रपति जी का अपमान भी कर चुके हैं। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको पर्याप्त मौका दिया था।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: जनजातीय समुदाय के प्रति नफरत भी दिखाई दी है और हमारे जनजातीय समाज के प्रति उनकी सोच क्या है। … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : देखिए**,** सदन**,** सदन के तरीके से चलेगा। आप लोग बोले थे**,** सबने सुना था। कोई डिस्टर्बेंस नहीं हो।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नो**,** गलत।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: लेकिन जब इस प्रकार की बातें टीवी के सामने कही गईं, तो भीतर पड़ा हुआ जो नफरत का भाव था, जो सच था, वह बाहर आकर ही रह गया।… (व्यवधान)। ठीक है, बाद में एक चिट्ठी लिखकर बचने की कोशिश तो की गई है।

माननीय अध्यक्ष जी, जब राष्ट्रपति जी के भाषण पर मैं चर्चा सुन रहा था, तो मुझे लगा कि बहुत सी बातों को मौन रह करके स्वीकार किया गया है। यानी, एक प्रकार से सबके भाषण मैं सुनता था तब लगा कि राष्ट्रपति जी के भाषण के प्रति किसी को ऐतराज नहीं है। किसी ने उसकी आलोचना नहीं की है। भाषण की हर बात, आप देखिए, क्या कहा है राष्ट्रपति जी ने, मैं उन्हीं के शब्द कोट करता हूं। राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण में कहा था, "जो भारत कभी अपनी अधिकांश समस्याओं के समाधान के लिए दूसरों पर निर्भर था, वही आज दुनिया की समस्याओं के समाधान का माध्यम बन रहा है।" राष्ट्रपति जी ने यह भी कहा था, "जिन मूल सुविधाओं के लिए देश की एक बड़ी आबादी ने दशकों तक इंतजार किया, वे इन वर्षों में उसे मिली हैं। बड़े-बड़े घोटालों, सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार की जिन समस्याओं से देश मुक्ति चाहता था, वह मुक्ति अब देश को मिल रही है। पॉलिसी पैरालिसिस की चर्चा से बाहर आकर आज देश और देश की पहचान, तेज विकास और दूरगामी दृष्टि से लिए गए फैसलों के लिए हो रही है।" यह पैराग्राफ जो मैं पढ़ रहा हूं, वह राष्ट्रपति जी के भाषण के पैराग्राफ को कोट कर रहा हूं। मुझे आशंका थी कि ऐसी-ऐसी बातों पर यहां जरूर ऐतराज करने वाले तो कुछ लोग निकलेंगे। वे विरोध करेंगे कि ऐसा कैसे बोल सकते हैं? लेकिन, मुझे खुशी है कि किसी ने विरोध नहीं किया, सबने स्वीकार किया।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं 140 करोड़ देशवासियों का आभारी हूं कि सबके प्रयास के परिणाम से आज इन सारी बातों को पूरे सदन में स्वीकृति मिली है। इससे बड़ा गौरव का विषय क्या हो सकता है?

आदरणीय अध्यक्ष जी, सदन में हंसी मजाक, टीका-टिप्पणी, नोक-झोंक, यह तो होता रहता है। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि आज राष्ट्र के रूप में गौरवपूर्ण अवसर हमारे सामने खड़ा है। हम गौरव के क्षण जी रहे हैं, राष्ट्रपति जी के पूरे अभिभाषण में जो बातें हैं, वह 140 करोड़ देशवासियों के लिए सेलिब्रेशन का अवसर है, देश ने इसे सेलिब्रेट किया है।

माननीय अध्यक्ष जी, 100 साल में आई हुई यह भयंकर बीमारी, महामारी, दूसरी तरफ युद्ध की स्थिति में बंटा हुआ विश्व, इस स्थिति में भी, संकट के माहौल में भी, देश को जिस प्रकार से संभाला गया है, देश जिस प्रकार से संभला है, इससे पूरा देश आत्मविश्वास से भर रहा है, गौरव से भर रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, चुनौतियों के बिना जीवन नहीं होता है, चुनौतियां तो आती हैं लेकिन चुनौतियों से ज्यादा सामर्थ्यवान हैं 140 करोड़ देशवासियों का जज्बा। 140 करोड़ देशवासियों का सामर्थ्य चुनौतियों से भी ज्यादा मजबूत है, बड़ा है और सामर्थ्य से भरा हुआ है। इतनी बड़ी भयंकर महामारी, बंटा हुआ विश्व, युद्ध के कारण हो रहे विनाश, अनेकों देशों में अस्थिरता का माहौल है, कई देशों में भीषण महंगाई है, बेरोजगारी है, खाने-पीने का संकट, हमारे अड़ोस-पड़ोस में भी जिस प्रकार से हालत बनी हुई है, ऐसी स्थिति में कौन हिन्दुस्तानी इस बात पर गर्व नहीं करेगा कि ऐसे समय में भी देश दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है।

आज पूरे विश्व में भारत को लेकर पॉजिटिविटी है, एक आशा है, भरोसा है। यह भी खुशी की बात है कि आज भारत को विश्व के समृद्ध देश जी-20 की अध्यक्षता का अवसर भी मिला है। यह देश के लिए गर्व की बात है। 140 करोड़ देशवासियों के लिए गौरव की बात है। लेकिन मुझे लगता है, पहले मुझे नहीं लगता था, लेकिन अभी लग रहा है, शायद इससे भी कुछ लोगों को दुख हो रहा है। 140 करोड़ देशवासियों में से किसी को दुख नहीं हो सकता है। वह आत्मनिरीक्षण करें कि वे कौन लोग हैं, जिनको इसका भी दुख हो रहा है।

श्री अधीर रंजन चौधरी: किसी को कोई दुख नहीं हो रहा है, आप गलतफहमी फैला रहे हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी, आज दुनिया की हर विश्वसनीय संस्था, सारे एक्सपर्ट्स, जो वैश्विक प्रवाहों को बहुत गहराई से अध्ययन करते हैं और जो भविष्य का अच्छे से अनुमान भी लगा सकते हैं, उन सबको आज भारत के प्रति बहुत आशा है, विश्वास है और बहुत मात्रा में उमंग भी है। आखिर यह सब क्यों है? ऐसे ही तो नहीं है। आज पूरी दुनिया भारत की तरफ इस प्रकार से बड़ी आशा की नजरों से क्यों देख रही है? इसके पीछे कारण है। इसका उत्तर छिपा है भारत में आई स्थिरता में, भारत की वैश्विक साख में, भारत के बढ़ते सामर्थ्य में और भारत में बन रही नई संभावनाओं में।

माननीय अध्यक्ष जी, हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में जो बातें हो रही हैं, उसी को अगर मैं शब्दबद्ध करूं और कुछ बातें उदाहरण के साथ समझाने की कोशिश करूं तो आप देखिए, भारत में एक, दो, तीन दशक अस्थिरता के रहे। आज स्थिरता है, पोलिटिकल स्टेबिलिटी है। स्टेबल गवर्नमेंट भी है और डिसीसिव गवर्नमेंट है, इसका भरोसा स्वाभाविक होता है। एक निर्णायक सरकार, एक पूर्ण बहुमत से चलने वाली सरकार राष्ट्रहित में फैसले लेने का सामर्थ्य रखती है। यह वह सरकार है, जिसमें रिफार्म आउट ऑफ कम्पलशन नहीं, रिफार्म आउट ऑफ कन्विक्शन हो रहे हैं। हम इस मार्ग से हटने वाले नहीं हैं, चलते रहेंगे। देश को समय की मांग के अनुसार जो चाहिए, देते रहेंगे।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं एक और उदाहरण की तरफ जाता हूं। इस कोरोना काल में मेड इन इंडिया वैक्सीन तैयार हुई। भारत ने दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन अभियान चलाया।... (व्यवधान) और इतना ही नहीं, आपने करोड़ों नागरिकों को मुफ्त वैक्सीन के टीके लगाए। ... (व्यवधान) इतना ही नहीं, हमने 150 से ज्यादा देशों को इस संकट के समय जहां जरूरत थी वहां दवाई पहुंचाई, जहां जरूरत थी वहां वैक्सीन पहुंचाई। आज विश्व के कई देश ऐसे हैं जो विश्व के मंच पर भारत के विषय में इस बात पर बड़े गौरव से धन्यवाद करते हैं और भारत का गौरव गान करते हैं।

मैं इसी प्रकार से तीसरे पहलू की तरफ ध्यान देता हूं। इसी संकट काल में भारत के डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर ने जिस तेजी से अपनी ताकत दिखाई है, एक आधुनिकता की तरफ बदलाव किया है, पूरा विश्व इसका अध्ययन कर रहा है। मैं पिछले दिनों जी-20 समिट में बाली में था। डिजिटल इंडिया की चारों तरफ वाहवाही हो रही थी और बहुत क्रियोसिटी थी कि देश कैसे कर रहा है। कोरोना काल में दुनिया के बड़े-बड़े देश, समृद्ध देश अपने नागरिकों को आर्थिक मदद पहुंचाना चाहते थे, नोट छापते थे, बांटते थे लेकिन बांट नहीं पाते थे। ये देश हैं जो एक फ्रिक्शन ऑफ सैकिंड में लाखों-करोड़ों रुपये देशवासियों के खाते में जमा करवाते हैं, हजारों-करोड़ों रुपये ट्रांसफर हो जाते हैं।

एक समय था, जब छोटी-छोटी टेक्नोलॉजी के लिए देश तरसता था। आज देश में बहुत बड़ा फर्क महसूस हो रहा है, टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में देश बड़ी ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है। ... (व्यवधान)

'कोविन', दुनिया के लोग जो अपने वैक्सीनेशन का सर्टिफिकेट भी नहीं दे पाते, आज आप वैक्सीन लीजिए और मोबाइल फोन पर हमारा सर्टिफिकेट दूसरी सेकेंड पर एवेलेबल हो जाता है। यह ताकत हमने दिखाई है। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, भारत में नई संभावनाएं हैं। दुनिया को सशक्त, वैल्यू और सप्लाई चेन में आज पूरी दुनिया में, हमने इस कोरोना कालखंड में सप्लाई चेन के मुद्दे पर दुनिया को हिलाकर रख दिया है। आज भारत उस कमी को पूरा करने की ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है। कई लोगों को यह बात समझने में देर लग जाएगी। भारत आज इसी दिशा में है और एक मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में उभर रहा है और दुनिया भारत की इस समृद्धि में अपनी समृद्धि देख रही है।

माननीय अध्यक्ष जी, निराशा में डूबे हुए कुछ लोग इस देश की प्रगति को स्वीकार ही नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें भारत के लोगों की उपलब्धियां नहीं दिखती हैं। यह 140 करोड़ देशवासियों के पुरषार्थ और प्रयास का परिणाम है, जिसके कारण आज दुनिया में डंका बजना शुरू हो गया है। उन्हें भारत के लोगों के पुरुषार्थ और परिश्रम से प्राप्त उपलब्धियां नजर नहीं आ रही हैं। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, पिछले नौ वर्षों में भारत में 90,000 स्टार्टअप्स बने हैं। आज स्टार्टअप की दुनिया में हम दुनिया में तीसरे नम्बर पर पहुंच गए हैं। एक बहुत बड़ा स्टार्टअप इको सिस्टम आज देश के टियर-2 और टियर-3 सिटीज में भी पहुंच चुका है। हिन्दुस्तान के हर कोने में पहुंचा है। यह भारत के युवा सामर्थ्य की पहचान बनता जा रहा है। इतने कम समय में और कोरोना के विकट कालखंड में 108 यूनिकॉर्न्स बने हैं। एक यूनिकॉर्न का मतलब होता है। उसकी वैल्यू 6-7 हजार करोड़ से ज्यादा होती है। यह इस देश के नौजवानों ने करके दिखाया है।

माननीय अध्यक्ष जी, आज भारत दुनिया में मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग में दूसरा बड़ा देश बन गया है। घरेलू विमान यात्री, डोमेस्टिक एयर ट्रैफिक में आज विश्व में हम तीसरे नम्बर पर पहुंच चुके हैं।

एनर्जी कंजम्पशन, जिसको प्रगति का एक मापदंड माना जाता है, आज भारत एनर्जी कंजम्पशन में दुनिया में कंज्यूमर के रूप में तीसरे नम्बर पर पहुंच चुका है। ... (व्यवधान) रिन्यूएबल एनर्जी की कैपेसिटी में हम दुनिया में चौथे नम्बर पर पहुंच चुके हैं।

स्पोर्ट्स, जिसमें हमारी कभी कोई पूछ नहीं होती थी, कोई पूछता नहीं था, आज स्पोर्ट्स की दुनिया में हर स्तर पर भारत के खिलाड़ी अपना रूतबा और सामर्थ्य दिखा रहे हैं। एजुकेशन समेत हर क्षेत्र में आज भारत आगे बढ़ रहा है।

माननीय अध्यक्ष जी, आपको गर्व होगा, पहली बार हायर एजुकेशन में एनरोलमेंट वालों की संख्या 4 करोड़ से ज्यादा हो गई है। इतना ही नहीं, बेटियों की भी भागीदारी बराबर होती जा रही है।

देश में चाहे इंजीनियरिंग कॉलेज हो, मेडिकल कॉलेज हो, प्रोफेशनल कॉलेजेज़ हों, उनकी संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। स्पोर्ट्स के अंदर भारत का परचम लहरा रहा है। चाहे ओलंपिक हो, कॉमनवेल्थ हो, हर जगह हमारे बेटे और हमारी बेटियों ने शानदार प्रदर्शन किया है।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं ऐसी अनेक बातें गिना सकता हूं। राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में कई बातें कही हैं। देश में हर स्तर पर, हर क्षेत्र में, हर सोच में आशा ही आशा नज़र आ रही है। एक

विश्वास से भरा हुआ देश है, सपने और संकल्प को लेकर चलने वाला देश है, लेकिन यहां कुछ लोग ऐसी निराशा में डूबे हुए हैं। काका हाथरसी जी ने एक बड़ी ही मजेदार बात कही थी। काका हाथरसी ने कहा था – 'आगा पीछा देखकर क्यों होते गमगीन, जिसकी जैसी भावना वैसा दिखे सीन'।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आखिर ये निराशा भी ऐसे नहीं आई है। इसके पीछे कारण है। एक तो जनता का हुकुम, बार-बार हुकुम, लेकिन साथ-साथ इस निराशा के पीछे जो अंतर्मन में पड़ी हुई चीज है, जो चैन से सोने नहीं देती है, वह क्या है। पिछले दस सालों में, यानी वर्ष 2004 से 2014 तक भारत की अर्थव्यवस्था खस्ताहाल हो गई थी, तो निराशा नहीं होगी, तो क्या होगा।...(व्यवधान) दस सालों में महंगाई डबल डिजिट रही और इसलिए अगर कुछ अच्छा होता है, तो निराशा और उभरकर सामने आती है।...(व्यवधान) जिन्होंने बेरोजगारी दूर करने के वादे किए थे।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, एक बार एक जंगल में दो नौजवान शिकार करने के लिए गए। वे अपनी बंदूक-वंदूक गाड़ी में उतारकर नीचे टहलने लगे। उन्होंने सोचा कि अभी आगे चलना है, तो थोड़ा हाथ-पैर ठीक कर लें। वे बाघ का शिकार करने के लिए गए थे। उन्होंने सोचा कि आगे जाएंगे, तो बाघ मिलेगा, लेकिन जहां उतरे थे, वहीं पर ही बाघ दिखाई दे गया। उनकी बंदूक-वंदूक गाड़ी में ही पड़ी थी। जब बाघ दिखा, तो क्या करें? तब उन्होंने लाइसेंस दिखाया कि मेरे पास बंदूक का लाइसेंस है।...(व्यवधान) इन्होंने भी बेरोजगारी दूर करने के नाम पर एक कानून दिखाया था कि कानून बना दिया है। अरे, देखो कानून बना दिया है। इन्होंने अपने तरीके से पल्ला झाड़ दिया। वर्ष 2004 से 2014 आज़ादी के इतिहास में सबसे ज्यादा घोटालों का दशक रहा है।...(व्यवधान)

यूपीए के वे 10 साल कश्मीर से कन्याकुमारी तक... (व्यवधान) भारत के हर कोने में आतंकवादी हमलों का सिलसिला चलता रहा। 10 सालों तक चलता रहा। हर नागरिक असुरक्षित था। चारों तरफ यही सूचना रहती थी कि किसी अनजानी चीज को हाथ मत लगाना, अनजानी चीज से दूर रहना। वही खबरें रहती थीं।... (व्यवधान) 10 सालों तक जम्मू कश्मीर से लेकर नार्थ ईस्ट

तक हिंसा ही हिंसा थी। देश उसका शिकार हो गया था।... (व्यवधान) उन 10 सालों में भारत की आवाज ग्लोबल प्लेटफॉर्म पर इतनी कमजोर थी कि दुनिया सुनने तक को तैयार नहीं थी।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इनकी निराशा का कारण यह भी है कि आज जब देश की क्षमता का परिचय हो रहा है, 140 करोड़ देशवासियों का सामर्थ्य खिल रहा है, खुलकर के सामने आ रहा है, चूँकि देश का सामर्थ्य तो पहले भी था, लेकिन वर्ष 2004 से लेकर वर्ष 2014 तक इन्होंने वह अवसर गंवा दिया। आज यूपीए की पहचान हर मौके को मुसीबत में पलटने वाली बन गई है। इन्होंने हर मौके को मुसीबत में पलट दिया। जब टेक्नोलॉजी इंफॉर्मेशन का युग बड़ी तेजी से बढ़ रहा था, उछल रहा था, उसी समय ये 2जी में फंसे रहे और मौका मुसीबत में। सिविल न्युक्लियर डील हुई, जब सिविल न्युक्लियर डील की चर्चा थी, तब ये कैश फॉर वोट में फंसे रहे।... (व्यवधान) ये खेल चला।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, वर्ष 2010 में कॉमन वेल्थ गेम्स हुए। भारत के युवा सामर्थ्य को दुनिया के सामने प्रस्तुत करना एक बहुत बड़ा अवसर था, लेकिन फिर मौका मुसीबत में और सीडब्ल्यूजी घोटाले में पूरा देश दुनिया में बदनाम हो गया।... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: हम जेपीसी मांगते हैं।... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: आदरणीय अध्यक्ष जी, सदी के दूसरे दशक में... (व्यवधान)

16.29hrs.

At this stage Shri Adhir Ranjan Chowdhury, Shri N.K.Premchandran and some other hon. Members left the House.

माननीय अध्यक्ष : यह उचित नहीं है। यह संसदीय परम्पराओं के अनुरूप नहीं है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बिना तथ्यों के बोलते हैं और फिर सुनते नहीं है।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नो, नो। आप बैठिए।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: आदरणीय अध्यक्ष जी, ऊर्जा का किसी भी देश के विकास में अपना एक महात्म्य होता है। जब दुनिया में भारत की ऊर्जा शक्ति के उभार की दिशा में चर्चा की जरूरत थी, इस सदी के दूसरे दशक में हिन्दुस्तान की चर्चा ब्लैक-आउट के नाते हुई। पूरे विश्व में ब्लैक-आउट के वे दिन चर्चा के केन्द्र में आ गए। कोयला घोटाला चर्चा में आ गया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश पर इतने आतंकी हमले हुए। वर्ष 2008 के हमलों को कोई भूल नहीं सकता है, लेकिन आतंकवाद पर सीना तानकर, आंख से आंख मिलाकर हमले करने का सामर्थ्य नहीं था। उस चुनौती को चुनौती देने की ताकत नहीं थी और उसके कारण आतंकवादियों के हौसले बुलन्द होते गए और पूरे देश में दस साल तक खून बहता रहा मेरे देश के निर्दोष लोगों का, ऐसे दिन रहे थे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब एलओसी और एलएसी पर भारत के सामर्थ्य की ताकत का अवसर रहता था, उस समय डिफेंस डील को लेकर, हेलिकॉप्टर घोटाले और सत्ता को कंट्रोल करने वाले लोगों के नाम उसमें चिन्हित हो गए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब देश के लिए जरूरत थी, निराशा के मूल में ये चीजें पड़ी हुई हैं, सब उभरकर आ रहा है। इस बात को हिन्दुस्तान हर पल याद रखेगा कि वर्ष 2014 से पहले का जो दशक था, उसे ‘ the Lost Decade’ के रूप में जाना जाएगा और इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि 2030 का जो दशक है, यह India’s Decade है पूरे विश्व के लिए । Thank you, Shashi ji.

आदरणीय अध्यक्ष जी, लोकतंत्र में आलोचना का बहुत महत्व मैं मानता हूं। मैं हमेशा मानता हूं कि भारत, जो कि मदर ऑफ डेमोक्रेसी है, सदियों से हमारे यहां लोकतंत्र हमारी रगों में पनपा हुआ है।

इसलिए मैं हमेशा मानता हूं कि आलोचना एक प्रकार से लोकतंत्र की मजबूती के लिए, लोकतंत्र के संवर्धन के लिए, लोकतंत्र की स्पिरिट के लिए आलोचना एक शुद्धि यज्ञ है। उस रूप में हम आलोचना को देखने वाले लोग हैं। दुर्भाग्य से, बहुत दिनों से मैं इंतजार कर रहा हूं कि कोई तो मेहनत करके आएगा, कोई तो एनालिसिस करके आलोचना करेगा, ताकि देश को कुछ लाभ हो, लेकिन नौ साल आलोचना नहीं, आरोपों में गंवा दिए। सिवाय आरोप, गाली-गलौज, कुछ भी बोल दो, इसके सिवाय कुछ नहीं किया। गलत आरोप, हाल यह है कि चुनाव हार जाओ तो ईवीएम खराब, दे दो गाली। चुनाव हार जाओ तो चुनाव आयोग को गाली दे दो। यह क्या तरीका है? अगर कोर्ट में फैसला पक्ष में नहीं आया तो सुप्रीम कोर्ट को गाली दे दो, उसकी आलोचना कर दो। अगर भ्रष्टाचार की जांच हो रही है।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, अगर भ्रष्टाचार की जांच हो रही है तो जांच एजेंसियों को गाली दो।

अगर सेना पराक्रम करे, सेना अपना शौर्य दिखाए और वह नेरेटिव देश के जन-जन के अंदर एक नया विश्वास पैदा करे तो सेना की आलोचना करो, सेना को गाली दो, सेना पर आरोप करो। ... (व्यवधान) कभी देश की आर्थिक प्रगति की खबरें आएं, आर्थिक प्रगति की चर्चा हो, विश्व के सारे संस्थान भारत का आर्थिक गौरवगान करें तो यहां से निकलो, आरबीआई को गाली दो, भारत के आर्थिक संस्थानों को गाली दो। ... (व्यवधान) हमने नौ साल देखा है कि कंसट्रक्टिव क्रिटिसिज्म की जगह लोकतंत्र के लिए जिसकी आवश्यकता है... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप माननीय नेता हैं, आप माननीय सदस्यों को समझा दें। यह संसदीय परंपरा के अनुरूप नहीं है कि बैठे-बैठे बोलें।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नो, गलत है। नो।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने भी बोला है, यह गलत तरीका है। आप बैठ जाइए, यह गलत तरीका है।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : जब सदन के नेता बोल रहे हैं तो आपको मर्यादा से सुनना चाहिए। प्लीज, बैठ जाइए।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, हमने पिछले नौ साल देखा है, कुछ लोगों की बैंकरप्सी को देखा है कि कंसट्रक्टिव क्रिटिसिज्म की जगह कंपल्सिव क्रिटिक्स ने ले ली है और यह कंपल्सिव क्रिटिक्स इसी में डूबे हुए हैं, खोये हुए हैं। सदन में भ्रष्टाचार की जांच करने वाली एजेंसियों के बारे में बहुत कुछ कहा गया और मैंने देखा कि बहुत सारे विपक्ष के लोग इस विषय में सुर में सुर मिला रहे थे कि मिले मेरा तेरा सुर। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, मुझे लगता था कि देश की जनता, देश के चुनाव के नतीजे ऐसे लोगों को जरूर एक मंच पर लाएंगे, लेकिन वह तो नहीं हुआ। इन लोगों को ईडी का धन्यवाद करना चाहिए कि ईडी के कारण ये लोग एक मंच पर आए हैं। … (व्यवधान) ईडी ने इन लोगों को एक मंच पर ला दिया है, जो काम देश के मतदाता नहीं कर पाए। … (व्यवधान) मैं कई बार से सुन रहा हूं कि यहां कुछ लोगों को हावर्ड स्टडी का बड़ा क्रेज है कि हावर्ड स्टडी, हावर्ड स्टडी। उसका बड़ा क्रेज है। कोरोना काल में ऐसा ही कहा गया था और कांग्रेस ने कहा था कि भारत की बर्बादी पर हावर्ड में केस स्टडी होगी। ऐसा कहा था। कल सदन में हावर्ड यूनिवर्सिटी में स्टडी की बात फिर से हुई, लेकिन बीते वर्षों में हावर्ड में एक बहुत बढ़िया स्टडी हुई है, बहुत इम्पोर्टेंट स्टडी हुई, उसका टॉपिक क्या था, मैं वह जरूर सदन को बताना चाहूंगा। वह स्टडी हो चुकी है। स्टडी है – 'द राइज़ एण्ड डिक्लाइन ऑफ इण्डियाज़ कांग्रेस पार्टी'।

यह स्टडी हो चुका है और मुझे विश्वास है कि भविष्य में कांग्रेस की बर्बादी पर सिर्फ हार्वर्ड ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में अध्ययन होना ही होना है और डुबाने वाले लोगों पर भी यह होने वाला है।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं ऐसे लोगों के लिए...(व्यवधान) इस प्रकार के लोगों के लिए दुष्यंत कुमार जी ने बहुत बढ़िया बात कही है । दुष्यंत कुमार जी ने जो कहा है, बहुत फिट बैठता है। ... (व्यवधान) उन्होंने कहा है :

तुम्हारे पांव के नीचे कोई ज़मीन नहीं,
कमाल यह है कि फिर भी तुम्हें यक़ीन नहीं।

माननीय अध्यक्ष जी, ये लोग बिना सिर-पैर की बातें करने के आदि होने के कारण, उनको यह भी याद नहीं रहता है कि खुद का कितना कॉन्ट्राडिक्शन कहते हैं, कभी एक बात, कभी दूसरी बात कभी एक तरफ, कभी दूसरी तरफ। यह हो सकता है कि वह आत्मचिंतन करके खुद के अंदर जो विरोधाभास है, उसको भी ठीक करेंगे। अब वर्ष 2014 से ये लगातार कोस रहे हैं, हर मौके पर कोस रहे हैं, भारत कमजोर हो रहा है, भारत की बात कोई सुनने को तैयार नहीं है, भारत का दुनिया में कोई वजूद नहीं रहा, न जाने क्या-क्या कहा और अब क्या कह रहे हैं? अब ये कह रहे हैं कि भारत इतना मजबूत हो गया है कि दूसरे देशों को धमका कर फैसले करवा रहा है।...(व्यवधान) अरे भाई! पहले यह तय करो कि भारत कमजोर हुआ है या मजबूत हुआ है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, कोई भी जीवंत संगठन होता है, जीवंत व्यवस्था होती है, जो जमीन से जुड़ी हुई व्यवस्था होती है, लोगों के अंदर, जनता-जनार्दन में क्या चलता है, उसका चिंतन करती है, उससे कुछ सीखने की कोशिश करती है और अपनी राह भी समय रहते हुए बदलते रहती है। लेकिन, जो अहंकार में डूबे होते हैं, बस सब कुछ हम ही को ज्ञान है, सब हमारा ही सही-सही है, जो ऐसी सोच में जीते हैं, उनको लगता है कि मोदी को गाली देकर ही हमारा रास्ता निकलेगा। मोदी पर झूठे, अनाप-

शनाप कीचड़ उछाल कर ही रास्ता निकलेगा।...(व्यवधान) अब 22 साल बीत गए, वे गलतफहमी पाल कर बैठे हुए हैं।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, मोदी पर भरोसा अखबार की सुर्खियों से पैदा नहीं हुआ है, मोदी पर यह भरोसा टीवी पर चमकते चेहरों से नहीं हुआ है। जीवन खपा दिया है, पल-पल खपा दी है। देश के लोगों के लिए जीवन खपा दिया है, देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए खपा दिया है।... (व्यवधान)

मोदी पर देशवासियों का जो भरोसा है, यह इनकी समझ के दायरे से बाहर है और समझ के दायरे से काफी ऊपर भी है।... (व्यवधान) ये सारे झूठे आरोप लगाने वालों पर मुफ्त राशन प्राप्त करने वाले मेरे देश के 80 करोड़ देशवासी क्या कभी उन पर भरोसा करेंगे?

आदरणीय अध्यक्ष जी, 'वन नेशन, वन राशन कार्ड' से देश भर में कहीं पर भी गरीब-से-गरीब को अब राशन मिल जाता है।... (व्यवधान) वह आपकी झूठी बातों पर, आपके गलीच आरोपों पर कैसे भरोसा करेगा? जिस किसान के खाते में साल में तीन बार पीएम किसान सम्मान निधि के माध्यम से 11 करोड़ किसानों के खाते में पैसे जमा होते हैं, वे आपकी गालियाँ, आपके झूठे आरोपों पर कैसे विश्वास करेंगे? जो कल फुटपाथ पर जिन्दगी जीने के लिए मजबूर था, जो झुग्गी-झोपड़ियों में जिन्दगी बसर करता था, ऐसे तीन करोड़ से ज्यादा लोगों को पक्के घर मिले हैं, वे तुम्हारी ये गालियाँ, वे तुम्हारी झूठी बातों पर क्यों भरोसा करेंगे? ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, नौ करोड़ लोगों को मुफ्त गैस का कनेक्शन मिला है, वह आदमी झूठ को कैसे स्वीकार करेगा? ... (व्यवधान) 11 करोड़ बहनों को 'इज्ज़त घर' मिले हैं, शौचालय मिले हैं, वे आपके झूठ को कैसे स्वीकार करेगा? ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आजादी के 75 साल बीत गए। आज 8 करोड़ परिवारों को नल से जल मिला है, वे माताएं तुम्हारे झूठ को कैसे स्वीकार करेंगी, तुम्हारी गलतियों को, गालियों को कैसे स्वीकार करेंगी? ... (व्यवधान)

'आयुष्मान भारत' योजना से 2 करोड़ परिवारों को मदद पहुंची है, उनकी जिन्दगी बच गई है। मुसीबत के समय मोदी उनके काम आया है।... (व्यवधान) वे तुम्हारी गालियों को कैसे स्वीकार करेंगे? आपकी गालियाँ, आपके आरोपों को, इन कोटि-कोटि भारतीयों से होकर गुजरना पड़ेगा, जिनको दशकों तक मुसीबत में जिन्दगी जीने के लिए आपने मजबूर किया था।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, कुछ लोग अपने लिए, अपने परिवार के लिए बहुत कुछ तबाह करने पर लगे हुए हैं। ... (व्यवधान) अपने लिए, अपने परिवार के लिए जी रहे हैं। ... (व्यवधान) मोदी तो 140 करोड़ देशवासियों के परिवारों का सदस्य है। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, 140 करोड़ देशवासियों का आशीर्वाद मेरा सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है और गालियों से शस्त्र से, झूठ के शस्त्रों-अस्त्रों से इस सुरक्षा कवच को कभी तुम भेद नहीं सकते हो। ... (व्यवधान) यह विश्वास का सुरक्षा कवच है और इन शस्त्रों से कभी तुम उसे भेद नहीं सकते हो। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, प्लीज, बैठ जाइए। आपका यह तरीका उचित नहीं है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं आपको बता देता हूं कि इस तरीके से सदन नहीं चलेगा। आपका यह तरीका गलत है। आप अपनी सीट पर बैठिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : यह संसद का सदन है, यहां बैठकर टिप्पणी करते हैं। जब सदन के नेता बोलते हैं, तो शांत रहा कीजिए, चीजों की मर्यादा रखा कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी सरकार कुछ बातों के लिए प्रतिबद्ध है। समाज के वंचित वर्ग को वरीयता देने के संकल्प को लेकर हम जी रहे हैं, इस संकल्प को लेकर चल रहे हैं। ...

(व्यवधान) दशकों तक दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को जिस हालत में छोड़ दिया गया था, उनमें वह सुधार नहीं आया, जो संविधान निर्माताओं ने सोचा था, जो संविधान निर्माताओं ने निर्दिष्ट किया था। ... (व्यवधान) वर्ष 2014 के बाद गरीब कल्याण योजनाओं का सर्वाधिक लाभ मेरे इन्हीं परिवारों को मिला है। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों की बस्तियों में पहली बार बिजली पहुंची है। ... (व्यवधान) मीलों तक उन्हें पानी के लिए जाना पड़ता था। पहली बार 'नल से जल' पहुंच रहा है, इन परिवारों में पहुंच रहा है। ... (व्यवधान) अनेक कोटि-कोटि परिवार पहली बार पक्के घरों में आज जा पाए हैं, वहां रह पाए हैं। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, जो बस्तियां इन्होंने छोड़ दी थीं, चुनाव के समय ही जिनकी इनको याद आती थी, आज सड़क हो, बिजली हो, पानी हो, इतना ही नहीं 4G कनेक्टिविटी भी वहां पहुंच रही है। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, पूरा देश गौरव कर रहा है। ... (व्यवधान) आज एक आदिवासी महिला को जब राष्ट्रपति के रूप में देखते हैं, तो पूरा देश गौरवगान कर रहा है। आज देश में आदिजाति समूह के नर-नारी, जिन्होंने मातृभूमि के लिए जीवन तर्पण कर दिए, आजादी की जंग का नेतृत्व किया, उनका पुण्य सम्मान आज हो रहा है और हमारे आदिवासियों का गौरव दिवस मनाया जा रहा है। ... (व्यवधान)

हमें गर्व है कि हमारी इस महान आदिवासी परंपरा की प्रतिनिधि के रूप में एक महिला देश का नेतृत्व कर रही हैं, राष्ट्रपति के रूप में काम कर रही है। ... (व्यवधान) हमने उनको हक दिया है। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, पहली बार देख रहे हैं, हम सभी का समान अनुभव है, सिर्फ मेरा ही अनुभव है ऐसा नहीं है, आपका भी अनुभव है। हम सभी जानते हैं कि माँ सशक्त होती है, तो पूरा परिवार सशक्त

होता है। जब माँ सशक्त होती है तो परिवार सशक्त होता है और जब परिवार सशक्त होता है तो समाज सशक्त होता है और तभी देश सशक्त होता है। मुझे संतोष है कि माताएं, बहनों, बेटियों की सबसे ज्यादा सेवा करने का सौभाग्य हमारी सरकार को मिला है। हर छोटी मुसीबत को दूर करने का प्रमाणिकपूर्वक प्रयास किया है। बड़ी संवेदनशीलता के साथ उस पर हमने ध्यान केंद्रित किया है। कभी-कभी मजाक उड़ाया जा रहा है कि ऐसा कैसा प्रधान मंत्री है जो लालकिले से टॉयलेट की बात करता है। बहुत मजाक उड़ाया गया। ये टॉयलेट, इज्जत घर मेरी माताओं, बहनों की क्षमता, उनकी सुविधा, उनकी सुरक्षा का सम्मान करने वाली बात है। बात इतनी ही नहीं है, जब मैं सेनिटरी पैड की बात कहता हूं तो लोगों को लगता है कि प्रधान मंत्री ऐसे विजन में क्यों जाते हैं। सेनिटरी पैड के अभाव में गरीब बहन, बेटियां अपमान सहती थीं और बीमारियों का शिकार हो जाती थीं। माताओं, बहनों को घर में दिन के कई घंटे बिताने पड़ते थे। उनका जीवन धुएं में फंसा रहता था। इन समस्याओं से मुक्ति दिलाने का काम हमारी सरकार ने किया है। उनकी जिंदगी खप जाती थी आधा समय पानी के लिए और आधा समय केरोसीन की लाइन में लगे रहते थे, आज इससे मुक्ति देने का संतोष हमें प्राप्त हुआ है।... (व्यवधान)

अध्यक्ष जी, जैसा पहले चलता था यदि वैसे ही हम चलने देते तो शायद हमसे कोई सवाल भी नहीं पूछता कि मोदी जी ये क्यों नहीं किया, वह क्यों नहीं किया, क्योंकि देश को आपने ऐसी स्थिति में ला दिया था कि इससे बाहर निकला ही नहीं जा सकता था। ऐसी निराशा में देश को झोंक कर रखा हुआ था। हमने उज्ज्वला योजना से धुएं से मुक्ति दिलाई। जल जीवन मिशन से पानी दिया। बहनों के सशक्तिकरण के लिए काम किया। 9 करोड़ बहनों को सैल्फ हैल्प ग्रुप से जोड़ना, माइनिंग से लेकर डिफेंस तक आज माताओं, बहनों, बेटियों के लिए अवसर खोल दिए हैं और ये खोलने का काम हमारी सरकार ने किया है। इस बात को हम याद करें कि वोट बैंक की राजनीति ने देश के सामर्थ्य को कभी-कभी बहुत गहरा धक्का पहुंचाया है और उसी का परिणाम है कि देश में जो समय पर होना चाहिए था,

उसमें काफी देर हो गई। आप देखिए मध्यम वर्ग को लम्बे समय तक पूरी तरह नकार दिया गया था, उसकी तरफ देखा तक नहीं गया। एक प्रकार से वह मानकर चला कि हमारा कोई नहीं है, इसलिए अपने बलबूते पर जो हो सकता है, वह करते चलो। वह बेचारा अपनी पूरी शक्ति खपा देता था लेकिन हमारी एनडीए सरकार ने मध्यम वर्ग की ईमानदारी को पहचाना है। उन्हें सुरक्षा प्रदान की है और आज हमारा परिश्रमी मध्यम वर्ग देश को नई ऊंचाई पर ले जा रहा है। सरकार की विभिन्न योजनाओं से मध्यम वर्ग को कितना लाभ हुआ है, उसका मैं उदाहरण देता हूं। वर्ष 2014 से पहले जीबी डेटा का देश में यूज देख सकते हैं। आज युग बदल चुका है। दुनिया ऑनलाइन चल रही है। हर किसी के हाथ में मोबाइल है। कुछ लोगों की जेब फटी होती है, लेकिन उनके पास भी मोबाइल होता ही है। वर्ष 2014 के पहले जीबी डेटा की कीमत 250 रुपये थी, लेकिन आज सिर्फ दस रुपये है।

17.00hrs

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारे देश में औसतन एक नागरिक 20 जीबी डेटा का उपयोग करता है। अगर उस हिसाब को मैं लगाऊं तो औसतन एक व्यक्ति के 5 हजार रुपये बचते हैं। जन औषधि स्टोर्स आज पूरे देश में आकर्षण का कारण बने हुए हैं, क्योंकि मध्यम वर्ग परिवार में यदि कोई सीनियर सिटिजन है, जिसे डायबीटीज की बीमारी है तो हजार, दो हजार, तीन हजार की दवाई हर महीने लेनी पड़ती है। जो दवाई बाजार में 100 रुपये में मिलती है, वह जन औषधि केंद्र में 10 रुपये, 20 रुपये में मिलती है। आज मध्यम वर्ग के 20 हजार करोड़ रुपये जन औषधि केंद्र के कारण बचे हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, हर मध्यम वर्गीय परिवार का सपना होता है कि उनका खुद का घर बने। अर्बन इलाके में होम लोन के लिए बड़ी व्यवस्था करने का काम हमने किया है। 'रेरा' कानून बनाने के कारण, जो विभिन्न प्रकार के तत्व मध्यम वर्ग की मेहनत की कमाई को सालों तक डुबोकर बैठे रहते थे, उनसे मुक्ति दिलाकर लोगों को एक नया विश्वास देने का काम हमने किया। इसके कारण खुद का घर बनाने की सहूलियत बढ़ गयी है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हर मध्यम वर्गीय परिवार के मन में अपने बच्चों के भविष्य के लिए, उनकी उच्च शिक्षा के लिए एक मंसूबा रहता है। आज जितनी संख्या में मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज और प्रोफेशनल कॉलेज की संख्या और सीटें बढ़ायी गयी हैं, उन्होंने मध्यम वर्ग के एस्पिरेशन को बहुत उत्तम तरीके से बढ़ाया है। लोगों को विश्वास होने लगा है कि उनके बच्चों का उज्ज्वल भविष्य अब निर्धारित है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश को आगे बढ़ाना है, तो भारत को आधुनिकता की तरफ ले जाने के अलावा कोई चारा नहीं है। समय की मांग है कि हम समय नहीं गंवा सकते, इसलिए हमने इन्फ्रास्ट्रक्चर की तरफ बहुत ध्यान दिया है। यह भी स्वीकार करना होगा कि गुलामी के कालखंड के पहले भारत की आर्किटेक्चर और इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए दुनिया में पहचान थी। गुलामी के कालखंड में सब नष्ट हो गया। देश आजाद होने के बाद वह दिन दोबारा भी आएगा, ऐसी आशा थी, लेकिन वह समय भी बीत गया। जो होना चाहिए था, जिस गति से होना चाहिए था, जिस स्केल से होना चाहिए था, वह हम नहीं कर पाए। आज बहुत बड़ा बदलाव इस दशक में देखा जा रहा है। ... (व्यवधान) चाहे सड़क हो, समुद्री मार्ग हो, व्यापार हो, वाटर वेज़ हो, आज हर क्षेत्र में भारत के इन्फ्रास्ट्रक्चर का काया-कल्प दिख रहा है। हाईवे पर रिकॉर्ड निवेश हो रहा है। ... (व्यवधान) दुनिया भर में चौड़ी सड़कों की तरह ही आज भारत में भी हाईवेज, एक्सप्रेस वेज देश की नई पीढ़ी देख रही है। ... (व्यवधान) भारत में वैश्विक स्तर के अच्छे हाईवेज, एक्सप्रेस-वेज दिखें, इस दिशा में हमारा काम हो रहा है। ... (व्यवधान) अंग्रेज जो रेलवे इन्फ्रास्ट्रक्चर देकर गए, हम उसी पर बैठे रहे और उसी को हमने अच्छा मान लिया। गाड़ी चलती रही। वो समय था अंग्रेज जिस प्रकार से हमें छोड़कर गए थे, उसी भाव में जीते रहे। रेलवे की पहचान क्या बन गयी थी? रेलवे यानी धक्का-मुक्की, रेलवे यानी एक्सिडेंट्स, रेलवे यानी लेट-लतीफी। यही स्थिति थी। लेट-लतीफी पर एक कहावत मैंने कही थी कि रेलवे यानी 'लेट-लतीफी'। एक समय ऐसा था कि हर महीने एक्सिडेंट्स की घटनाएं बार-बार होती थीं। एक समय

ऐसा था कि एक्सिडेंट्स की घटनाएं किस्मत बन गयी थी, लेकिन अब ट्रेनों में वंदे भारत की मांग के लिए हर एमपी चिट्ठी लिखता है कि मेरे यहां वंदे भारत चालू करो। ... (व्यवधान)

आज रेलवे स्टेशनों का कायाकल्प हो रहा है।... (व्यवधान) आज एयरपोर्ट का कायाकल्प हो रहा है।... (व्यवधान) 70 साल में 70 एयरपोर्ट्स।... (व्यवधान) 70 साल में 70 एयरपोर्ट।... (व्यवधान) 9 साल में 70 एयरपोर्ट्स।... (व्यवधान) देश में वाटरवेज भी बन रहा है।... (व्यवधान) आज वाटरवेज पर ट्रांसपोर्टेशन हो रहा है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश आधुनिकता की तरफ बढ़े, इसके लिए आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर को बल दिया जा रहा है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैंने जीवन में, सार्वजनिक जीवन में चार-पाँच दशक मुझे हो गए हैं और मैं हिन्दुस्तान के गाँवों से गुजरा हुआ इंसान हूँ। चार-पाँच दशक तक, उसमें से एक लंबा कालखंड परिव्राजक के रूप में बिताया है। मुझे हर स्तर के परिवारों से बैठने-उठने का, बात करने का अवसर मिला है और इसीलिए भारत के हर भू-भाग को, समाज की हर भावना से मैं परिचित हूँ।... (व्यवधान) मैं इसके आधार पर कह सकता हूँ और बड़े विश्वास से कह सकता हूँ कि भारत का सामान्य मानवी पॉजिटिविटी से भरा हुआ है। सकारात्मकता उसके स्वभाव का, उसके संस्कार का हिस्सा है। भारतीय समाज नेगेटिविटी को सहन कर लेता है, स्वीकार नहीं करता है, जो उसकी प्रकृति नहीं है।... (व्यवधान) भारतीय समुदाय का स्वभाव खुशमिजाज है, स्वप्नशील समाज है। सत्कर्म के रास्ते पर चलने वाला समाज है। सृजन कार्य से जुड़ा हुआ समाज है।... (व्यवधान) मैं आज कहना चाहूँगा, जो लोग सपने लेकर के बैठे हैं कि कभी यहाँ बैठते थे, फिर कभी मौका मिलेगा।... (व्यवधान) ऐसे लोग जरा 50 बार सोचें।... (व्यवधान) अपने तौर-तरीकों पर जरा पुनर्विचार करें।... (व्यवधान) लोकतंत्र में आपको भी आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है।... (व्यवधान)

आधार आज डिजिटल लेन-देन का सबसे बड़ा, महत्वपूर्ण अंग बन गया है।... (व्यवधान) आपने उसको भी निराधार करके रख दिया था।... (व्यवधान) आप उसके भी पीछे पड़ गए थे।... (व्यवधान) उसको भी रोकने के लिए कोर्ट-कचहरी तक को छोड़ा नहीं था।... (व्यवधान) जीएसटी को न जाने क्या-क्या कह दिया गया।... (व्यवधान) पता नहीं, लेकिन आज हिन्दुस्तान की अर्थव्यवस्था को और सामान्य मानवी का जीवन सुगम बनाने में जीएसटी ने एक बहुत बड़ी भूमिका अदा की है।... (व्यवधान) एचएएल को कितनी गालियाँ दी गईं।... (व्यवधान) किस प्रकार से बड़े-बड़े फोरम का मिसयूज किया गया।... (व्यवधान) आज एचएएल एशिया का सबसे बड़ा हेलीकॉप्टर बनाने वाला हब बन चुका है।... (व्यवधान) जहाँ से तेजस हवाई जहाज सैंकड़ों की संख्या में बन रहे हैं।... (व्यवधान) भारतीय सेना के हजारों करोड़ रुपये के ऑर्डर आज एचएएल के पास हैं।... (व्यवधान) भारत के अंदर आज वाइब्रेंट डिफेंस इंडस्ट्री आगे आ रही है।... (व्यवधान) आज भारत डिफेंस एक्सपोर्ट करने लगा है।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, हिन्दुस्तान के हर नौजवान को गर्व होता है। निराशा में डूबे हुए लोगों से अपेक्षा नहीं है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आप भलीभाँति जानते हैं, समय सिद्ध कर रहा है, जो कभी यहाँ बैठते थे, वे वहाँ जाने के बाद भी फेल हुए हैं। वहाँ जाने के बाद भी वे फेल हुए हैं और देश पास होता जा रहा है, डिस्टिंक्शन से जा रहा है।... (व्यवधान) इसीलिए समय की माँग है कि आज निराशा में डूबे हुए लोग थोड़ा स्वस्थ मन रखकर आत्मचिंतन करें।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहाँ जम्मू-कश्मीर की भी चर्चा हुई।... (व्यवधान) जम्मू-कश्मीर की भी चर्चा हुई और जो अभी-अभी जम्मू-कश्मीर घूमकर आए हैं, उन्होंने देखा होगा कि कितनी आन- बान, शान के साथ आप जम्मू-कश्मीर में जा सकते हैं, घूम सकते हैं, फिर सकते हैं।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मैं भी जम्मू कश्मीर में यात्रा लेकर गया था और लाल चौक में तिरंगा फहराने का संकल्प लेकर चला था। उस समय आतंकवादियों ने पोस्टर लगाये थे और कहा था कि देखते हैं कि किसने अपनी माँ का दूध पीया है, जो लाल चौक में आकर तिरंगा फहराता है। वहां पोस्टर लगे थे और उस दिन 24 जनवरी थी। मैंने जम्मू के अंदर भरी सभा में कहा था। अध्यक्ष जी, मैं पिछली शताब्दी की बात कर रहा हूं और तब मैंने कहा था कि आतंकवादी कान खोलकर सुन लें। ... (व्यवधान) उस दिन मैंने कहा था कि आतंकवादी कान खोलकर सुन लें कि 26 जनवरी को ठीक 11 बजे मैं लाल चौक पहुंचूंगा, बिना सिक्योरिटी आऊँगा, बुलेट प्रूफ जैकेट के बिना आऊँगा। अब फैसला लाल चौक में होगा कि किसने अपनी माँ का दूध पीया है ।... (व्यवधान) वह समय था।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, श्री नगर के लाल चौक में तिरंगा फहराया, उसके बाद मीडिया के लोग पूछने लगे, मैंने कहा था कि आम तौर पर तो 15 अगस्त और 26 जनवरी को जब भारत का तिरंगा लहराता है तो भारत के आयुध, भारत के बारूद सलामी देते हैं, आवाज करके देते हैं।... (व्यवधान) मैंने कहा कि आज मैं जब लाल चौक के अंदर तिरंगा फहरा रहा हूं, तो दुश्मन देश का बारूद भी सलामी कर रहा है ।... (व्यवधान) पहले गोलियां चला रहा था, बंदूकें, बम फोड़ रहा था ।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज शांति आई है। आज चैन से जा सकते हैं, सैकड़ों की तादाद में जा सकते हैं।... (व्यवधान) यह माहौल, पर्यटन की दुनिया में कई दशकों के बाद सारे रिकार्ड जम्मू कश्मीर ने तोड़े हैं। आज जम्मू कश्मीर में लोकतंत्र का उत्सव मनाया जा रहा है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज जम्मू कश्मीर में हर घर तिरंगे के सफल कार्यक्रम होते हैं। इसकी मुझे खुशी है। कुछ लोगों को तिरंगे से शांति बिगड़ने का खतरा लगता था।... **(**व्यवधान**)** ऐसा कहते थे

कि तिरंगे से जम्मू कश्मीर में शांति बिगड़ने का खतरा लगता था। वक्त देखिये, वक्त का मजा देखिये। अब वे भी तिरंगा यात्रा में शरीक हो गए।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, अखबारों में एक खबर आई थी, जिसकी तरफ ध्यान नहीं गया होगा।... (व्यवधान) उसी समय अखबारों में एक खबर आई थी, क्योंकि लोग टीवी में चमकने की कोशिश में लगे थे। लेकिन उसी समय श्रीनगर के अंदर दशकों बाद थियेटर हाउसफुल चल रहे थे और अलगाववादी दूर-दूर तक नजर नहीं आते थे। अब यह भी देश ने देखा है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, अभी हमारे साथी, माननीय सदस्य नॉर्थ ईस्ट के लिए कह रहे थे। मैं कहूंगा कि जरा एक बार नॉर्थ ईस्ट हो आइये। आपके जमाने का नॉर्थ ईस्ट और आज के जमाने का नॉर्थ ईस्ट देखकर आइये।

आधुनिक चौड़े हाइवे हैं, रेल का सुख-सुविधा वाला सफर है, आप आराम से हवाई जहाज़ से जा सकते हैं। नॉर्थ-ईस्ट के हर कोने में आज विकास है। हम आजादी का 75वां साल मना रहे हैं, तब मैं गर्व से कहता हूँ कि इन 9 सालों में करीब-करीब 7500 लोग, जो हथियारों के रास्ते पर चल पड़े थे, ऐसे लोगों ने सरेंडर कर दिया है और अलगाववादी प्रवृत्ति छोड़ कर, मुख्य धारा में आने का काम किया है। ... (व्यवधान) आदरणीय अध्यक्ष जी, आज त्रिपुरा में लाखों परिवारों को पक्का घर मिला है। उनकी खुशी में मुझे शरीक होने का अवसर मिला था। जब मैंने त्रिपुरा में हीरा योजना की बात कही थी तब मैंने कहा था कि हाईवे, आईवे, रेलवे और एयरवे यानि हीरा। इस हीरा की आज सफलतापूर्वक त्रिपुरा की धरती पर मजबूती नज़र आ रही है और त्रिपुरा तेज़ गति से आज भारत की विकास यात्रा का भागीदार बना है।

अध्यक्ष जी, मैं जानता हूँ कि सच सुनने के लिए भी बहुत सामर्थ्य लगता है। आदरणीय अध्यक्ष जी, झूठे और गंदे आरोपों को सुनने के लिए भी बहुत बड़ा धैर्य लगता है। मैं इन सबका अभिनंदन करता हूँ, जिन्होंने धैर्य के साथ गंदी से गंदी बातें सुनने की ताकत दिखाई है। ये अभिनंदन के

अधिकारी हैं। लेकिन जो सच सुनने का सामर्थ्य नहीं रखते हैं, वे कितनी निराशा की गर्त में डूब चुके होंगे, इसका देश आज सबूत देख रहा है। ... (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं, विचारधारा में मतभेद हो सकते हैं। ... (व्यवधान) लेकिन यह देश अजर-अमर है। ... (व्यवधान) आओ, हम चल पड़ें, वर्ष 2047 में आजादी के 100 साल मनाएंगे। ... (व्यवधान) एक विकसित भारत बना कर रहेंगे। ... (व्यवधान) एक सपना ले कर के चलें, एक संकल्प लेकर चलें, पूरे सामर्थ्य के साथ चलें। जो लोग बार-बार गांधी के नाम पर रोटी सेंकते हैं, उनको मैं कहना चाहता हूँ कि एक बार गांधी को पढ़ लें, एक बार महात्मा गांधी को पढ़ लें। ... (व्यवधान) महात्मा गांधी ने कहा था कि अगर आप अपने कर्त्तव्यों का पालन करोगे तो दूसरों के अधिकारों की रक्षा उसमें निहित है। ... (व्यवधान) आज कर्त्तव्यों और अधिकारों के बीच भी लड़ाई देख रहे हैं।... (व्यवधान) ऐसी नासमझी शायद देश ने पहली बार देखी होगी। ... (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, मैं फिर एक बार आदरणीय राष्ट्रपति जी को अभिनंदन करता हूँ, राष्ट्रपति जी का धन्यवाद करता हूँ और देश आज यहां से एक नई उमंग और एक नए विश्वास और नए संकल्प के साथ चल पड़ा है। ... (व्यवधान)

बहुत-बहुत धन्यवाद। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, अब मैं सभी संशोधनों को एक साथ सभा के सामने मतदान के लिए रखूंगा।

<u>संशोधन मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए</u>।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, प्लीज़ बैठिए। एक मिनट मेरी बात सुनिए। साहब, आप पहले बैठिए।

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर**,** अडानी के मुद्दे पर जेपीसी की इंक्वायरी होनी चाहिए।... (व्यवधान)